''डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य और नाटक का अनुशीलन''

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के

मानव विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध– प्रबंध का प्रारुपण

शोधकर्ता

श्री. अरविंद मोतीराम शेजवळ

एम.ए. बी.एड. नेट

ता. मालेगाव, जि. नासिक

शोध – निर्देशक

प्रा.डॉ. अशोक तुकाराम जाधव

एम.ए. नेट, पीएच.डी.

हिन्दी विभाग, कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर

महाविद्यालय, उमरी, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

जून – 2019

भूमिका

हिंदी साहित्य मुझे सदैव अपनी और आकर्षित करता रहा है। कविता, कहानी, संस्मरण रेखाचित्र, नाटक, हास्य व्यंग्य कविताएँ जो भी साहित्य कि विधाएँ है । वो मन में घर कर जाती है । यही कारण है कि, मैंने हिंदी भाषा में अपना भविष्य बनाने का निश्चय किया । एम.ए. हिंदी करने के उपरांत मैं नेट परीक्षा पास हुआ और हिंदी साहित्य में अनुसंधान करने का अवसर मिल रहा है । डॉ. अशोक जाधव जी के मार्गदर्शन में हास्य– व्यंग्य की कविता और नाटक मे मेरी रुचि को देखकर अनुसंधान करने की प्रेरणा दी ।

डॉ. अशोक चक्रधर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है हास्य व्यंग्य विधामें विशिष्ट योगदान है ।

साहित्यिक अभिरुचि के साथ– साथ अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने प्रौढ एवं नव साक्षरों के लिए विपुल लेखन हास्य व्यंग्य की कविता, नाटक, बाल साहित्य, समीक्षा अनुवाद, पटकथा आदि अनेक विधाओं में लेखन किया । देश की समस्याओं के प्रति संलग्नता, समझदारी, यथार्थ बोध और संवेदना की भूमिका को लेकर साहित्य सृजन में प्रवृत्त हुए।

डॉ. अशोक चक्रधर कविता की वाचिक परंपरा का विकास करने वाले प्रमुख विद्वानों में से भी एक है। उनकी रचना में आम आदमी की पक्ष धरता के अतिरिक्त कवि सम्मेलन को स्तरीयता प्राप्त करने के साथ–साथ भाषा का सामर्थ्य भी स्थापित करते है। उनके हास्य–व्यंग में गहरे सामाजिक यथार्थ से उभरा एक वृत्तचित्र देखने को मिलता है। डॉ. अशोक चक्रधर के हास्य व्यंग्य में बडी शक्ति है और वही हमारी भाषा की, हमारे देश और हमारी जनता की शक्ति है।

डॉ. अशोक चक्रधर की कलम ने उन्हे विविधता और संपन्नता का रचनाकार बना दिया चक्रधर ने अपने कवि रूप को अधिक प्राथमिकता दी है। उन्होंने हास्य व्यंग्य की कविताओं के माध्यम से समाज में हो रही कुप्रथा, सामाजिक विसंगतियों, मुल्य विघटन, भ्रष्टाचार, व्यापक विकृतियों को अपने हास्य –व्यंग्य कविताओं और नाटकों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। पाठक और श्रोताओं को सोचने पर विवश करते है।

विषय का चयन

डॉ. अशोक चक्रधर की रचनाओं का अध्ययन करते समय स्वयं मैं उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से प्रभावित हो गया । इसी विचारों के बारे में सोचने के लिए मुझे विवश किया। मेरे मन में अनेक प्रश्न उदित हुए। इन्ही प्रश्नों के उत्तर पाने की जिज्ञासा मन में पैदा हुई। इसी जिज्ञासा से उनके साहित्य पर अनुसंधान करने की मुझे प्रेरणा मिली। अतः मैने

निश्चय कर लिया कि, डॉ. **'अशोक चक्रधर के काव्य और नाटक का अनुशीलन'** इस विषय पर शोध कार्य करना है। डॉ. अशोक चक्रधर के साहित्य पर आज तक किसी भी छात्र ने शायद अनुसंधान कार्य नही किया है।

अनुसंधान कार्य का उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित है।

1) हास्य– व्यंग्य कविताओं में चित्रित सामाजिक व्यवस्था को प्रकट करना ।

2) हास्य– व्यंग्य कविताओं में चित्रित जीवन के विविध परिदृश्य उजगार करना ।

3) हास्य– व्यंग्य कविताओं में प्रस्तुत राजनीति की सोचनीय स्थिती से अवगत कराना ।

4) हास्य– व्यंग्य कविता में चित्रित लालफितशाही को प्रस्तुत करना ।

5) हास्य– व्यंग्य कविताओं में चित्रित समाज में विद्यमान असामानताओं को प्रकट करना ।

6) नाटकों में चित्रित वर्तमान उपभोक्ता संस्कृति को स्पष्ट करना ।

7) नाटकों में चित्रित कुरीतियों से समाज को अवगत करना ।

डॉ. अशोक चक्रधर कि रचनाओंपर नजर

'रंग जमा लो' पुस्तक में दस नाटकनुमा कविताएँ तथा कवितानुमा नाटक लिखने का एक सफल प्रयोग है । 'रंग जमा लो' ऐसे एक बहुरंगी फूलों का गुलदस्ता है । डॉ. अशोक चक्रधर ने अपनी अनोखी सुझ– बुझ तथा विषयानुकूल शिल्प से इन्हें जो रुप दिया है । वह ह्रदयस्पर्शी है । समस्त नाटिकाओं में काव्य की गुँजे है निश्चल हास्य की फुहारे हैं, व्यंग्य की तीखी मार है । गीत है, नृत्य की थिरकन है । कहीं कठपुतली की कमाल है तो कही पैरोंडी की बहार है । जैसें

डाला सिर पर गुलाल
हटाऊ कैसे ?
धुलवाऊँ कैसें ?
डाला
होली मेरी जान की दुश्मन
है जी का जंजाल
बाहर से मैं आया बचकर
घर में मला गुलाल
ओ ऽऽ होली निगोडी से खुद को
बचाऊ कैसे कही जाऊ कैसे?
डाला सिर पर गुलाल

हटाऊँ कैसे?

'बुढे बच्चे' कविता के आरंभ में जो परिवेश का बयान है वह लाजवाब है । सादा मगर प्रभावी लगता है । कामकाजी बच्चों का भविष्य राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं में से एक समस्या है, जिसकी तरफ बहुत देर से ही सही मगर ध्यान दिया गया है । उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी, सुरक्षा का प्रबंध वैसा नहीं हो पाया है, जैसा कि होना चाहिए, डॉ. अशोक चक्रधर की यह कविता समय से पहले बयान किया यथार्थ भी है और अपने समय का सच भी है जो खुब पढा गया जैसे –

गलियों से गले मिलती गलियाँ है ।
गलिया ही गलिया है ।
गलिया दर गलिया है गलियों में महकती हुई ।
पूरी एक दुनिया हैं ।
गली हाफिज बननेवाली ।
गली हकीमजी की ।
गली सुर्खापोशी वाली ।
गली पीरमुर्गे वाली । गली मीर कासिमजान ।
इसी गली का हाथ थामे टूजी गली ।
चली गई ने इस गली के पैर छुए ।
इस गली ने उस गली के कान पकडे ।
तीसरी गली ने चौथी गली के सिरपर हाथ फैरा ।
पाचवी ने पहली का फुला हुआ पेट ही टटोल लिया ।

कम उम्र में ही कन्या का विवाह कर देना, हमारे देश की एक बडी समस्या है । इसके बहुत सारे घातक परिणाम समाज में दिखाई पडते है । समय की माँग है कि सभी मिलकर इस कुरीति को दूर करने का संकल्प ले । 'बिटिया' कविता के द्वारा कम उम्र की कन्या के विचार डॉ. अशोक चक्रधर ने स्पष्ट किये है ।

नहीं नही शादी नही अभी नहीं,
ऐसा होगा सोचा मैने कभी नहीं
मेरी मैया ओ मेरी मैया ।
बिटिया तुम्हारी हूँ मै कितनी विचारी हुँ मैं
हो गई मैं पल में पराई,
अब न सुहाती हुँ मैं प्यार नहीं पाती हुँ मैं,
ऐसी क्या थी मुझ में बुराई,
मारो चाहों पिटो तो भी जाऊगी नहीं,

मेरे भैया ओ मेरे भैया ।।
करो बोटी बोटी मेरी उमर है छोटी मेरी,
ना मानु मैं ना मानु ना ना
तोड़ूगी कलाई को मैं मंडप सजाई को मैं,
ज्यादा नहीं मुझको सताना ।
अन्न जल कुछ भी तो पाऊगी नहीं
धक्के देके निकालोंगे तो भी जाऊगी नहीं
मेरे बापु मेरी मैया ओ मेरे भैया ।

अनुसंधान कार्य की उपयोगिता –

डॉ. अशोक चक्रधर जी के साहित्य में चित्रित जीवन के विभिन्न घटनाओं रहस्यों कृतियों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर जनता सोचने को विवश होगी उसके लिए कुछ करने का प्रयत्न कर सकती है । लोगो में चेतना निर्माण कर सकती है । समाज में विद्यमान असमानता, कुप्रथा, सामाजिक विसंगतियों को जानकर जनता जागृत होगी । जिसमें इंसानियत सर्वधर्म समभाव आदि गुणों की राष्ट्रीय स्तर पर वृध्दि होगी । सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक यथार्थता को समझकर उसमें सुधार करने का प्रयास इस अनुसंधान के माध्यम से हो सकता है । यह छात्रों तथा समाज के हित का है । तथा राष्ट्रीय विकास के लिए यह अनुसंधान उपयोगी हो सकता है ।

इस अनुसंधान के माध्यम से आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उपयोगी हो सकता है । भारतीय नागरिक बडी संख्या में विदेशों में बसे हुए है । इस अनुसंधान से वे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थिति से अवगत होंगे और इस स्थिति में सुधार करने का प्रयास करेंगे ।

अनुसंधान की सीमाएँ –

1) प्रस्तुत अनुसंधान कार्य डॉ. अशोक चक्रधर के दस काव्य संग्रह की कविता और पाँच नाटको तक सीमित है ।

2) प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में अशोक चक्रधर के काव्य संग्रह की कविता और नाटकों में चित्रित समाज जीवन काही चित्रण है ।

3) प्रस्तुत शोध कार्य डॉ. अशोक चक्रधर के दस काव्य संग्रह की कविता और नाटकों के पात्रों तक सीमित है ।

अनुसंधान की रुपरेखा

कवि के रूप में डॉ. अशोक चक्रधर का साहित्य सृजन 1960 इ.स. से अब तक चल रहा है। उनका साहित्य शोषित एवं पीडित लोगों का पक्षधर है। अपनी रचनाओं में इंसानियत,सर्वधर्म समभाव आदि मानवीय गुणों पर दृष्टिक्षेप किया है।

स्व. श्री. शरद जोशी ने लिखा है 'मैने उन हजारों मोहित श्रोताओं को देखा है जो डॉ. अशोक चक्रधर जी के कविता पाठ के समय एक सहज मुस्कान के साथ ठहाका लगाते है और उनकी कविता के दर्द को अपने अंतर में गहराई से अनुभव करते है लोकतंत्र की सोचनीय स्थिति पर कटाक्ष किया है । जैसे (काव्य संग्रह भोले– भाले) जिज्ञासा

यह डैमोक्रैसी क्या होती है?
पी.ए. कुछ झिझका
सकुचाया शर्माया ।
बोलो बोलो
डैमोक्रैसी क्या होती है ?
सर, जहां
जनता के द्वारा
जनता की
ऐसी– तैसी होती है
वहीं डैमोक्रैसी होती है

संशोधन पध्दति :

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य निम्नलिखित संशोधन पध्दतियों के अनुसार किया जाएगा है ।

1) शोधात्मक अनुसंधानात्मक रुप से संशोधन किया जाएगा ।

2) समाज जीवन के विविध आयामों का निर्वाह करते हुए प्रस्तुत शोध प्रबंध पर अनुसंधान किया जाएगा ।

3) आलोचनात्मक

4) व्याख्यात्मक

5) तुलनात्मक

'डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य और नाटक का अनुशीलन' इस विषय पर लिखा गया है । मेरे शोध प्रबंध की मौलिकता इस प्रकार है ।

1) डॉ. अशोक चक्रधर के कविताओं और नाटको में चित्रित समाज जीवन को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान क्षेत्र में शायद पहली बार चित्रण हुआ है ।

2) प्रस्तुत अनुसंधान समाज जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करता है ।

3) प्रस्तुत अनुसंधान माध्यम से अशोक चक्रधर के कविताओं नाटको में चित्रित समाज जीवन का सुक्ष्मता से विवेचन किया जाएगा ।

अनुसंधान को पूर्ण करने हेतु तथा अध्ययन की सुविधा के लिए इसे उपसंहार सहित सात अध्यायों में विभाजित किया है ताकी डॉ. अशोक चक्रधर के साहित्य में अभिव्यक्त उनके विचारों को विश्लेषित करने में सहजता मिल जाएगी ।

अतः प्रत्येक अध्याय के निम्नलिखित सारांश स्वरुप को स्पष्ट किया जा रहा है ।

प्रथम अध्याय

डॉ. अशोक चक्रधर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जीवन परिचय, जन्म एवं जन्मस्थान, बचपन तथा शिक्षा, जीवन यापन, पारिवारिक जीवन, माता– पिता व्यक्तित्व के विभिन्न पहेलु, सन्मान, विभिन्न व्यक्तियों तथा विचारों का प्रभाव, साहित्य लेखन के प्रेरणा स्त्रोत, साहित्य लेखन का आरंभ, प्रथम रचना, काव्य साहित्य, काव्य अनुवाद, नाटक, बालसाहित्य, प्रौढ एवं नवसाक्षर साहित्य, दूरदर्शन, लेखन, निर्देशन अभिनय, संपादन, निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय

डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य में व्यंग्य

सामाजिक विसंगतियो पर तिखा व्यंग्य अनुभूतिपूर्ण दृष्टीकोन राजनीति की दयनीय स्थिति पर व्यंग्य, समकालिन समझ, मूल्य– विघटन का संकेत, समाज जागृति का प्रयत्न, स्वस्थ समाज के पुननिर्माण की कामना, निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय

डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य अनुशीलन

सामाजिक दृष्टि से नारी का स्थान, पारिवारिक दृष्टि से नारी का स्थान, धार्मिक दृष्टि से नारी का स्थान नारी के आदर्शो युक्त गुणों की प्रशंसा, नारी को उचित स्थान देने के लिए प्रयास, दाम्पत्य जीवन, निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय

डॉ. अशोक चक्रधर के नाटक तथा वर्ग संघर्ष

आर्थिक स्थिति का उदघाटन, नियति का चित्रण, सरकारी कार्यो पर व्यंग्यात्मक भाष्य यथार्थवादी काव्य, स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए कामना, नाटकों में विडंबना के द्वारा व्यंग्य निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय

डॉ. अशोक चक्रधर के साहित्य की भाषा और शैली

अनोखी सुझ– बुझ तथा विषयानुरुप शिल्प, निश्चल हास्य की फुहारे व्यंग्य की तीखी मार, छोटे– छोटे काव्यमयी संवाद, कथावस्तु के मर्म को व्यक्त करने में सक्षम, स्वस्थ मनोरंजन के साथ– साथ सदप्रेरणा के द्वार खोलते है, वर्तमान उपभोक्ता संस्कृति पर व्यंग्य बालविवाह जैसी कुरीती की समस्याओं को प्रस्तुत कर उन्हें दूर करने का प्रयास निष्कर्ष ।

षष्टम अध्याय

उपसंहार

आधारग्रंथ सूची

कविता संग्रह

1) बुढे बच्चे
2) सो तो है ।
3) भोले– भाले
4) तमाशा
5) चुटपुट कुले
6) हंसो और मर जाओं
7) देश धन्य पंच कन्या
8) ए.जी. सुनिए
9) खिडकियाँ
10) इसलिये बोडमजी इसलिये
11) बोल– गप्पे
12) जाने क्या टपके
13) चुनी चुनाई
14) सोची समझी
15) जो करे सो जोकर
16) मसाला राम

नाटक

1) रंग जमा लो
2) बिटिया की सिसकी
3) बंदरिया चली ससुराल
4) जब रहा न कोई चारा
5) लल्लेश्वरी

संदर्भ ग्रंथ

1) अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर – डॉ. दिपक के
2) मुक्तिबोध की कविताएँ – डॉ. अशोक चक्रधर
3) डॉ. अशोक चक्रधर जीवनी – जीवनी ऑरगनाईजेशन
4) कविता कोश
5) मिली भगत – डॉ. विवेक रंजन श्रीवास्तव
6) अंजाम – ए– गुलिस्ता क्या होगा – पल्लवी त्रिवेदी
7) बेवकुफी का सौंदर्य – अनुप शुक्ल
8) हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. अशोक तुकाराम जाधव
एम.ए. नेट, पीएच.डी.
हिन्दी विभाग, कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर
महाविद्यालय, उमरी, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

शोधकर्ता

श्री. अरविंद मोतीराम शेजवळ